आज दिनांक 16/08/2023 को अपराह्न 2:00 बजे दर्शनशास्त्र विभाग में प्रोफेसर प्रभात कुमार, संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष की अध्यक्षता में पाठ्यक्रम समिति (BOS) की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में निम्नलिखित सदस्यों की उपस्थिति रही तथा विषय विशेषज्ञों ने ऑनलाईन प्रतिभाग किया।

- प्रो. प्रभात कुमार – अध्यक्ष
- प्रो. सन्तोष कुमार शुक्ला -- विषय विशेषज्ञ ऑनलाइन उपस्थिति
- प्रो. विभा मुकेश – विषय विशेषज्ञ ऑनलाईन उपस्थिति
- प्रो. ब्रह्मदेव विद्यालंकार – विशेष आमंत्रित 14/08/23
- डॉ. सोहनपाल सिंह आर्य – विशेष आमंत्रित 16/08/2023
- डॉ. बबीता शर्मा – असि0 प्रोफेसर 16/08/2023
- डॉ. बबलू वेदालंकार – असि0 प्रोफेसर 16/8/23
- डॉ. भारत वेदालंकार – विशेष आमंत्रित 16/8/2023
- डॉ. आशीष कुमार – विशेष आमन्त्रित 16-8-2023

कार्यवाही – विभागाध्यक्ष एवं संकायाध्यक्ष प्रो. प्रभात कुमार ने बहुविषयक चतुर्वर्षीय स्नातक बी.ए. प्रोग्राम एवं चतुर्वर्षीय स्नातक (ऑनर्स / विद्यालंकार - दर्शनशास्त्र) पाठ्यक्रम से सम्बन्धित निम्नलिखित पाठ्यक्रम BOS की बैठक में विचार हेतु प्रस्तुत किये –

बहुविषयक चतुर्वर्षीय स्नातक बी.ए. पाठ्यक्रम –

- BPI-C101 (भारतीय दर्शन)
- BPI-C201 (पाश्चात्य दर्शन)
- BPI-C311 (नीतिशास्त्र)
- BPI-S311 (पातञ्जल योग एवं व्यक्तित्व विकास – सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक)
- BPI-C411 (पाश्चात्य तर्कशास्त्र)
- BPI-S411 (शास्त्रार्थ : सिद्धान्त एवं परम्परा – सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक)

चतुर्वर्षीय स्नातक बी.ए. (ऑनर्स / विद्यालंकार) पाठ्यक्रम –

- HPI-C101 (प्राचीन भारतीय दर्शन - I)
- HPI-C102 (प्राचीन भारतीय दर्शन - II)
- HPI-S101 (पातञ्जल योग एवं व्यक्तित्व विकास)
- HPI-C311 (भारतीय नीतिशास्त्र)
- HPI-C312 (पाश्चात्य नीतिशास्त्र)

- HPI-C313 (नैतिक निर्णय निर्माण)
- HPI-G311 (दार्शनिक प्रविधि)
- HPI-C411 (भारतीय तर्कशास्त्र)
- HPI-C412 (पाश्चात्य तर्कशास्त्र)
- HPI-C413 (विज्ञान का दर्शन)
- HPI-G411 (प्रबन्धन का दर्शन)

समिति ने बैठक में प्रत्येक पाठ्यक्रम पर बिन्दुवार विचार-विमर्श किया तथा विषय विशेषज्ञों – प्रो0 सन्तोष कुमार शुक्ला और प्रो0 विभा मुकेश ने उक्त पाठ्यक्रमों से सम्बन्धित अनेक उपयोगी सुझाव दिये तथा अन्य सभी उपस्थित सदस्यों ने भी इन पाठ्यक्रमों को अन्तिम रूप देने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिये। उन सबके आलोक में विभागाध्यक्ष एवं संकायाध्यक्ष प्रो. ब्रह्मदेव विद्यालंकार ने सभी सदस्यों एवं शिक्षकों, शिक्षिकाओं से परामर्श कर उक्त सभी सुझावों को समाहित करते हुये पाठ्यक्रम को अन्तिम रूप प्रदान किया, जिसे सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया।

16/8/23 16/08/2023 16/8/23

16-8-2023 16/08/2023

16/8/23

ओ३म्

दर्शनशास्त्र विभाग

Department of Philosophy

गुरुकुल काङ्गड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत

Gurukula Kangri (Deemed to be University), Haridwar, UK. Bharat (India)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) वर्ष 2020 पर आधृत
बहुविषयक चतुर्वर्षीय स्नातक
दर्शनशास्त्र पाठ्यक्रम

Undergraduate (Multi Disciplinary), B.A. Four Year's Course for Philosophy under
National Education Policy (NEP) - 2020

शैक्षणिक सत्र - 2022-23 से प्रभावी

Implemented from Academic Session - 2022-23

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

(Programme Objectives)

भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय के निर्देशों के अनुसार गुरुकुल काङ्गड़ी (समविश्वविद्यालय) का स्नातक स्तरीय (B.A. Programme) दर्शनशास्त्र का पाठ्यक्रम NEP - 2020 के अनुरूप संरचित है। यह पाठ्यक्रम आठ सत्रों तथा चार वर्षों में विभक्त है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को दर्शनशास्त्र में विद्यमान् विविध दार्शनिक तत्त्वों का सम्यक् बोध कराना है। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु पाठ्यक्रम में भारतीय व पाश्चात्त्य दर्शन में वर्णित ज्ञानमीमांसीय, तत्त्वमीमांसीय, नीतिशास्त्रीय व तर्कशास्त्रीय विषयों को सम्मिलित किया गया है। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में जीवन को उसकी समग्रता में देखने का एक दार्शनिक कौशल विकसित होगा तथा उनमें बौद्धिक, तार्किक, भावनात्मक बुद्धि, नैतिक व यथेष्ट आध्यात्मिक प्रवृत्तियों का परिमार्जन होगा। विद्यार्थी सामाजिक जीवन के लिए उपयोगी न्याय, स्वतन्त्रता, जीवन के मौलिक अधिकार, कर्त्तव्य व सामाजिक राजनैतिक व्यवस्थाओं के दार्शनिक अवधारणाओं को समझने, उनका निर्माण एवं उनके अनुपालन करने में कुशल होंगे। यह कुशलता व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन को अवश्य ही बेहतर बनाने में सहायक होगी। प्रस्तुत पाठ्यक्रम का ध्येय विद्यार्थियों में इसी दार्शनिक कुशलता को विकसित करना है।

Four Year Bachelor of Arts (Hons) in Faculty of Humanities/Oriental Studies (currently known as B.A. Programme)

Semester	Discipline specific Core (DSC) 6cr	Discipline Specific Elective (DSE) 6cr	Generic Elective (GE) 6cr	Ability Enhancement Compulsory Courses (AECC) 4cr	Skill Enhancement Courses (SEC)/ Vocational Courses (VoC)/ Co-Curricular = 4cr	*Value Addition Courses (VAC)/Industrial Training/Survey and Field Work/Research Project/ Dissertations= 2cr*	Total Credits
I	English/IL (6) **BPI-C111 भारतीय दर्शन (Indian Philosophy)** अन्य विषय (6)			Language and Literature (4)/ Environmental Science and Sustainable Development (4)	NSS/NCC/Cultural (Music/Arts/Drawing& Painting/Dance) **(Qualifying)**	*Yogic Science/ Physical Education and Sports/ Human Psychology*	24
II	English/IL (6) **BPI-C211 (6) पाश्चात्य दर्शन** अन्य विषय (6)			Environmental Science and Sustainable Development/Language and Literature (4)	NSS/NCC/Cultural (Music/Arts/Drawing & Painting/Dance)**(Qualifying)**	*Yogic Science/ Physical Education and Sports/ Human Psychology*	24
	AWARD OF **CERTIFICATE** **(after 1 year- 48 Credits)**						
III	IL/English (6) **BPI- C311 (6) नीतिशास्त्र (Ethics)** अन्य विषय				**BPI-S311 (4) पातञ्जल योग एवं व्यक्तित्व विकास (सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक) [Patanjal Yoga and Personality Development (Theory & Practical)]**	*IT Skills, Data Analysis /* Digital Literacy and Cyber Security *(2)*	24
IV	IL/English (6) **BPI -C411 (6) पाश्चात्य तर्कशास्त्र (Western Logic)** अन्य विषय (6)				**BPI-S411 शास्त्रार्थ - सिद्धान्त एवं परम्परा (सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक) [Debate - Theory and Tradition (Theory & Practical)]**	*Science and Society (2)*	24
	AWARD OF **DIPLOMA** **(after 2 Years- 96 Credits)**						
V		**BPI-E501 जैन दर्शन (Jainism)/ BPI-E502 बौद्ध दर्शन (Buddhism) BPI-503 दयानन्द के दार्शनिक विचार (Philosophical Thought of Swami Dayananda)** अन्य विषय	**BPI-G501 अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र (Applied Ethics)**		**BPI-S501 नैतिक निर्णय निर्माण (Ethical Decision Making)**	***Innovation and Entrepreneurship/*Health & Wellness/** Field Study Techniques & Report Writing *(2)* क्षेत्राध्ययन – आर्यसमाज का संस्कृत प्रसार में योगदान / स्त्रीशिक्षा एवं जनजागरण में गुरुकुलों का योगदान	24
VI		**BPI-E601 डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के दार्शनिक विचार (Philosophical Thought of Dr. B.R. Ambedkar)/ BPI-E602 जैव नीतिशास्त्र (Bioethics)/ BPI-E603 प्रौद्योगिकी और नीतिशास्त्र (Technology And Ethics)** अन्य विषय (6)	**BPI-G601 सामाजिक राजनैतिक दर्शन (Socio-Political Philosophy)**		**BPI-S601 (4) दार्शनिक विधियाँ *(Philosophical Methodology)***	***Ethics and Culture/*** The essence of Indian Traditional Knowledge/ ***BKT (2)***	24
	AWARD OF **Bachelor of Arts (B.A.) in concerned discipline (after 3 Years- 144Credits)**						
VII	***(Choose any one discipline from A, B)*** ***HPI-C701* समकालीन भारतीय दर्शन *(Contemporary Indian Philosophy)*** ***HPI-C702* समकालीन पाश्चात्य दर्शन *(Contemporary Western Philosophy)***				Management Paradigms From Bhagavad Gita/Sanskrit (2)	***Survey and Field Work/ Research Project/ Dissertation on Major (6)***	26

	HPI-C703 धर्मदर्शन (*Philosophy of Religion*)						
VIII	*HPI-C801* अधिनीतिशास्त्र (*Metaethics*)				Personality Development Through Applied Philosophy of Ramcharitmanas/	***Research Project/ Dissertation (6)***	**26**
	HPI-E801	**भारतीय भाषा दर्शन (*Indian Language Philosophy*)**					
	HPI-E802	**सौन्दर्यशास्त्र (Aesthetics)**					
	HPI-E803	**वैदिक दर्शन (Vedic Philosophy)**					
	HPI-E804	**वेदान्त दर्शन - शंकर एवं रामानुज (Philosophy of Vedanta- Shankara and Ramanuja)**					
	HPI-E805	**शिक्षा दर्शन (Philosophy of Education)**					
	HPI-E80*6*	**विज्ञान का दर्शन (Philosophy Of Science)**					
	AWARD OF **Bachelor of Arts (Hons) in concerned discipline (4Years) (after 4 Years- 196 Credits)**						
Credits							**196**

दर्शनशास्त्र विभाग, गुरुकुल काँगड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार

चार वर्षीय स्नातक स्तर पाठ्यक्रम

कार्यक्रम अध्ययन के परिणाम [Porogramme Outcomes (POs)]

Pos	Attributes
PO 1	दर्शन के मूलभूत तत्त्वों को समझ सकेंगे।
PO 2	दार्शनिक अवधारणाओं की विश्लेषणात्मक एवं समीक्षात्मक व्याख्या कर सकेंगे।
PO 3	ज्ञान के स्वरूप, प्रामाणिकता व ज्ञान के सीमाओं को समझने में निपुण होंगे।
PO 4	किसी तत्त्व से सम्बन्धित संज्ञानात्मक दावों की परीक्षा कर सकेंगे।
PO 5	जगत् के मूलतत्त्व के सम्बन्ध में दार्शनिक सिद्धान्तों को समझ सकेंगे।
PO 6	समुचित विधि से तर्क कर सकेंगे।
PO 7	यथार्थ एवं अयथार्थ में मूलतः भेद को भी स्पष्ट कर सकेंगे।
PO 8	किसी नियम आदि की तार्किक वैधता की जाँच कर सकेंगे।
PO 9	तार्किक अनुमान व तार्किक सामान्यों की स्थापना कर सकेंगे।
PO 10	भारतीय व पाश्चात्त्य नैतिक सिद्धान्तों को स्पष्टता पूर्वक समझ सकेंगे।
PO 11	शुभ – अशुभ, उचित-अनुचित, अच्छा-बुरा, सद्गुण-दुर्गुण आदि नैतिक प्रत्ययों का यथेष्ट अर्थ प्रस्तुत कर सकेंगे।
PO 12	न्याय, स्वतन्त्रता, सम्प्रभुता, अधिकार, कर्त्तव्य, दण्ड आदि सामाजिक-राजनैतिक प्रत्ययों का समीक्षात्मक मूल्याङ्कन कर सकेंगे।
PO 13	नैतिक निर्णयों का निर्माण कर सकेंगे।
PO 14	जीवन और जगत् को समग्रता से समझने में निपुण हो सकेंगे।
PO 15	यौगिक क्रियाओं के द्वारा मन व शरीर को स्वस्थ बना सकेंगे।

कार्यक्रम अध्ययन के विशिष्ट परिणाम [Programme Specific Outcomes (PSOs)]

S.N.	Attributes
PSO 1	मानवीय समाज, समूह अथवा संस्थानों के सञ्चालन हेतु ऐसे नियमों व कानूनों का निर्माण कर सकेंगे, जिनमें न्याय, समता, स्वतन्त्रता, अधिकार व कर्त्तव्य आदि नैतिक मूल्यों का समावेश हो।
PSO 2	किसी कथन के सत्यता की तार्किक परीक्षा करने में निपुण हो सकेंगे।
PSO 3	सामाजिक व व्यक्तिगत जीवन में उत्पन्न होने वाले नैतिक द्वन्द्वों का समुचित समाधान कर सकेंगे।
PSO 4	विविध रोजगार-परक प्रतियोगात्मक परीक्षाओं में मूल्याङ्कन की जाने वाली बौद्धिक, तार्किक एवं नैतिक दक्षता को प्राप्त कर सकेंगे ।
PSO 5	तार्किक अथवा युक्तिसंगत सम्भाषण कर सकेंगे।
PSO 6	व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन का प्रबन्धन करने में निपुण होंगे।
PSO 7	विद्यार्थियों में भावनात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence) का विकास होगा।
PSO 8	दार्शनिक अनुसन्धान की क्रिया कर सकेंगे।
PSO 9	विपरीत अथवा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनःस्थिति को शान्त व स्थिर रख सकेंगे।

सत्र - प्रथम

Semester –I

DSC | **भारतीय दर्शन** | **पूर्णाङ्क 100**

Paper Code BPI-C111 | **Indian Philosophy** | **सत्रान्त परीक्षा - 60**

सत्रीय मूल्याङ्कन - 40

क्रेडिट 06

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को दर्शनशास्त्र विषय के विविध आयामों से परिचित कराना है। इसका ध्येय विद्यार्थियों में दर्शनशास्त्रीय दृष्टिकोण को विकसित करना है, जिससे छात्र जीवन एवं जगत् से सम्बन्धित ज्ञानमीमांसीय, तत्त्वमीमांसीय अथवा नैतिक मूल्य आदि विविध विषयों के सम्बन्ध में एक स्पष्ट समझ बना सकें तथा दर्शनशास्त्र एवं अन्य शास्त्रों के मध्य वर्णित विशिष्ट सम्बन्ध का ज्ञान प्राप्त कर सकें। इस पाठ्यक्रम में प्राचीन भारतीय मनीषियों द्वारा विचार किये गये प्रमुख दार्शनिक तत्त्वों को प्रस्तुत किया गया है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय दार्शनिक विचारों से भलीभाँति अवगत कराना है। इन विशिष्टताओं के साथ यह पाठ्यक्रम छात्रों को दर्शनशास्त्र विषय के सम्बन्ध में सशक्त चिन्तन-शक्ति प्रदान करेगा।

प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 30 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 अङ्क असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 60 अङ्क की होगी। सत्रान्त परीक्षा हेतु प्रस्तुत प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब तथा स) में विभक्त होगा। खण्ड 'अ' में 5 अतिलघु उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 02 अङ्कों का होगा। खण्ड 'ब' में 06 लघूत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 04 प्रश्नों का उत्तर 150-150 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'ब' का प्रत्येक प्रश्न 5 अङ्कों का होगा। खण्ड 'स' में 05 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 03 प्रश्नों का उत्तर 500-500 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'स' का प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्कों का होगा।

Course Contents (पाठ्य – विषय)

इकाई I

- दर्शनशास्त्र का अर्थ, स्वरूप, विषय-वस्तु (दर्शनशास्त्र की प्रमुख शाखाएं :- ज्ञानमीमांसा - तर्कशास्त्र, तत्त्वमीमांसा एवं नीतिशास्त्र) दर्शनशास्त्र का महत्त्व। फिलॉसॉफी एवं दर्शन के मध्य अन्तर।
- भारतीय दर्शन के लक्षण, वर्गीकरण :- आस्तिक एवं नास्तिक सम्प्रदाय।
- वेद एवं उपनिषदों का परिचय, उपनिषद् :- ब्रह्म एवं आत्मा।
- भगवद्गीता :- ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग।

इकाई II

- चार्वाक (लोकायत) :- ज्ञानमीमांसा, तत्त्वमीमांसा एवं नीतिशास्त्र।
- जैन दर्शन :- सत् की प्रकृति और वर्गीकरण, स्याद्वाद, अनेकान्तवाद, कर्म, बन्धन एवं मुक्ति का सिद्धान्त।

- बौद्ध दर्शन :- चार आर्य सत्य, प्रतीत्यसमुत्पाद, अनात्मवाद, क्षणिकवाद, निर्वाण।

इकाई III

- सांख्य :- पुरुष, प्रकृति, मुक्ति, विकासवाद, सत्कार्यवाद।
- योग :- चित्त, चित्तवृत्ति, चित्तभूमियाँ, अष्टांग-योग, ईश्वर।

इकाई IV

- न्याय :- प्रमा, अप्रमा एवं प्रमाण। प्रत्यक्ष एवं प्रकार - निर्विकल्पक, सविकल्पक, लौकिक, अलौकिक एवं योगज। अनुमान, व्याप्ति, परामर्श, अनुमान का वर्गीकरण - पूर्ववत्, शेषवत्, सामान्यतोदृष्ट , केवलान्वयी, केवलव्यतिरेकी, अन्वयव्यतिरेकी, स्वार्थानुमान, परार्थानुमान। उपमान, शब्द प्रमाण, ईश्वर के अस्तित्व में प्रमाण।
- वैशेषिक :- पदार्थ, द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव एवं परमाणुवाद।

इकाई V

- मीमांसा (प्रभाकर एवं भट्ट) :- अर्थापत्ति और अनुपलब्धि, धर्म, अपूर्व।
- अद्वैत वेदान्त :- ब्रह्म, माया, मुक्ति। विशिष्टाद्वैत :- ब्रह्म, माया, मुक्ति।

Unit I

- Meaning, Nature, Origin and Subject-Matter of Philosophy (Major Branches of Philosophy – Epistemology - Logic, Metaphysics, Ethics), Importance of Philosophy, Distinction between *Darśana* and Philosophy.
- Characteristics & Classification of Indian Philosophy:- *Āstika* & *Nāstika*,
- Introduction to the Vedas & Upanishadas. *Upanishad* :- *Brahaman* and *Ātman*.
- *Bhagavadgītā :- Jñānayoga, Karmayoga* and *Bhaktiyoga.*

Unit II

- *Cārvāk* (*Lokāyata)* :- Epistemology, Metaphysics & Ethics.
- Jainism :- Nature and Classification of Reality, *Syādavāda, Anekāntavāda*. Theory of Karma, Bondage and Liberation.
- Buddhism :- Four Noble Truths, Pratityasamutpāda, Anātmavāda (No-soul theory), Theory of Momentariness, Nirvāna.

Unit III

- Sāṅkhya :- Puruşa, Prakiti, Mukti, Theory of Evolution, Satkāryavāda.
- Yoga :- Citta, Cittavritti, Cittabhumiyan, Eight-fold path (Astang Yoga), God.

Unit IV

- Nyāya :- Pramā, Apramā & Pramānas. Pratyaksa and its types – Nirvikapaka, Savikalpaka, Laukika, Alaukika, Yogaja. Anumān, Vyāpti, Parāmarsa, Classification of Anumāna - Purvavat, Sheshavat, Samanyatodrista, Kevalanvayi, Kevalavyatriki, Anvayavyatireki, Svarthanumān, Pararthanumān, Upmān, Shabda, Proofs for the Existence of God.
- Vaiśeşika :- Padārthas, Dravya, Guna, Karma, Samanya, vishesha, Samavāya, Abhāva, Atomism.

Unit V

- Mīmāmsā (Prabhākar & Bhatta) :- Arthapatti & Anupalabdhi, Dharma, Apūrva.
- Advaita Vedānta :- Brahman, Māyā, Mukti. Viśişţādvaita :- Brahman, Māyā, Mukti.

पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcome)

CO1 - दर्शनशास्त्र के स्वरूप, उसके विषय-वस्तुओं एवं उनका महत्त्व तथा अन्य शास्त्रों से दर्शन के सम्बन्ध को समझ सकेंगे।

CO2 - ज्ञानमीमांसीय, तर्क, तत्त्वमीमांसीय व नीतिमीमांसीय आदि दार्शनिक विषय क्षेत्रों का वर्गीकरण व व्याख्या कर सकेंगे।

CO3 - प्रमा, प्रमेय व प्रमाण के सम्बन्ध में प्राचीन भारतीय दार्शनिक सिद्धान्तों को स्पष्टता पूर्वक समझ सकेंगे।

CO4 - सत् तत्त्व के स्वरूप सम्बन्धी भारतीय दार्शनिक अन्वेषणों से परिचित होंगे।

CO5 – जीव, जगत् व ईश्वर के सम्बन्ध में भारतीय दार्शनिक सिद्धान्तों को समझ सकेंगे।

CO6 – योग के मूलभूत तत्त्वों को समझ सकेंगे।

सहायक ग्रन्थ (Recommended Readings)-

- Chatterjee, S - Datta. D.M (1984) *An Introduction to Indian Philosophy*, 8th ed., University of Calcutta, (Eng-Hindi)
- Dasgupta, S.N (2004), *A History of Indian Philosophy, vol.1*, Delhi- MLBD Publishers.
- Datta, D.M., (1972) *The Six Ways of Knowing*, University of Calcutta.
- Hiriyanna, M. (1994) *Outlines of Indian Philosophy*, Delhi- MLBD Publishers.
  (2015) *The Essentials of Indian Philosophy*, Delhi- MLBD Publishers.
- Mohanty, J.N. (1992) *Reason and Tradition in Indian Thought,* Oxford- Clarendon Press. (2002) *Essays on Indian Philosophy*, (2nd ed) ed. by P. Bilimoria, UK- Oxford University Press.
- Murthi, K. S. (1959) *Revelation and Reason in Advaita Vedanta*. Waltair- Andhra University Press.

- Organ, T. W. (1964) *The Self in Indian Philosophy*. London- Mounton - Co.
- Pandey, S. L. (1983) *Pre-Śaṁkara Advaita Philosophy*, (2nd ed.) Allahabad- Darsan Peeth.
- Radhakrishnan, S. (1929) *Indian Philosophy, Volume 1*. Muirhead Library of Philosophy (2nd ed.) London- George Allen and Unwin Ltd.
- Radhakrishnan, S. and Moore, C. A. (1967) *A Sourcebook in Indian Philosophy*, Princeton.
- Raju, P.T. (1985) *Structural Depths of Indian Thought,* Albany, NY- State University of New York Press.
- Sharma, C.D (2000), *A Critical Survey of Indian Philosophy*, Motilal Banarasidass,
- वेदालंकार, जयदेव, भारतीय दर्शन की समस्याएं, प्राच्यविद्या शोध प्रकाशन, हरिद्वार।

Mapping of Course Outcomes with Programme Outcomes & Programme Specific Outcomes

Point Scale

Scale	Point
Below 20% similarity between PO and CO	1
20% to 50% Similarity between PO and CO	2
Above 50% Similarity between PO and CO	3

Cos	PO 1	PO 2	PO 3	P04	PO 5	PO 6	PO 7	PO 8	PO 9	PO 10	PO 11	PO 12	PO 13	PO 14	PO 15	PSO 1	PSO 2	PSO 3	PSO 4	PSO 5	PSO 6	PSO 7	PSO 8	PSO 9
CO1	3	3												2					1				1	
CO2	3	3												2					1				1	
CO3	1	2	3	2		1	3	3	2								2		2				2	
CO4	1	2			3		2							3					2				2	
CO5	3	3				2								2										
CO6	1	1													3							3		3

Note- 1-Low, 2-Medium, 3-High

सत्र - द्वितीय

Semester – II

DSC
Paper Code BPI-C211

पाश्चात्य दर्शन
Western Philosophy

पूर्णाङ्क 100
सत्रान्त परीक्षा - 60
सत्रीय मूल्याङ्कन - 40
क्रेडिट 06

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम में प्राचीन व आधुनिक पाश्चात्य दार्शनिकों द्वारा विचार किये गये प्रमुख दार्शनिक अवधारणाओं को प्रस्तुत किया गया है, जिसका उद्देश्य छात्रों को पाश्चात्य दर्शनशास्त्र की विशेषताओं एवं प्रमुख सिद्धान्तों का ज्ञान कराना है, जिससे विद्यार्थियों में ज्ञान व तत्त्व से सम्बन्धित दार्शनिक चिन्तन की कुशलता विकसित हो सके।

प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 30 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 अङ्क असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 60 अङ्क की होगी। सत्रान्त परीक्षा हेतु प्रस्तुत प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब तथा स) में विभक्त होगा। खण्ड 'अ' में 5 अतिलघूत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 02 अङ्कों का होगा। खण्ड 'ब' में 06 लघूत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 04 प्रश्नों का उत्तर 150-150 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'ब' का प्रत्येक प्रश्न 5 अङ्कों का होगा। खण्ड 'स' में 05 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 03 प्रश्नों का उत्तर 500-500 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'स' का प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्कों का होगा।

Course Contents (पाठ्य – विषय)

इकाई-I

- ग्रीक दर्शन की उत्पत्ति एवं प्रकृति, पश्चिमी दर्शन की मुख्य विशेषताएं, माइलेशियन और पाइथागोरियन सम्प्रदाय के परमतत्त्व का सिद्धान्त, इलियाई सम्प्रदाय का सत् सिद्धान्त, हेराक्लाइटस का सम्भूति सिद्धान्त, एम्पेडाक्लीज़ का तत्त्व का सिद्धान्त।
- एनेक्ज़ागोरस :- नाउस का सिद्धान्त, ल्यूसिप्पस और डेमोक्रिटस का परमाणु सिद्धान्त, सोफिस्ट के मुख्य सिद्धान्त, सोक्रेटिक विधि।

इकाई-II

- प्लेटो :- ज्ञान, धारणा और विश्वास, प्रत्यय का सिद्धान्त।
- अरस्तू :- प्रत्ययवाद की समीक्षा, द्रव्य और आकार, कार्य-कारण, वास्तविकता और सम्भाव्यता।
- सेंट ऑगस्टीन का ज्ञान सिद्धान्त, बुराई की समस्या।
- थॉमस एक्विनास का ईश्वर के सम्बन्ध में दृष्टिकोण, विश्वास और कारण के बीच अन्तर।

इकाई-III

- डेकार्ट :- दर्शन की समस्या, सन्देह की विधि, *'मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ'',* द्रव्य की अवधारणा, ईश्वर के अस्तित्व में प्रमाण, जड़ एवं चेतन का सम्बन्ध।
- स्पिनोज़ा :- द्रव्य की अवधारणा, गुण एवं पर्याय, ईश्वर एवं सर्वेश्वरवाद।
- लाइबनिज़ :- चिदणु का सिद्धान्त, पूर्व-स्थापित सामञ्जस्य।

इकाई-IV

- लॉक :- जन्मजात प्रत्ययों का खण्डन, ज्ञान का सिद्धान्त, द्रव्य, प्राथमिक एवं द्वितीयक गुण।
- बर्कले :- भौतिकवाद की आलोचना, *सत्ता दृश्यता है,* व्यक्तिपरक प्रत्ययवाद।
- ह्यूम :- अनुभववाद की परिणति, आध्यात्मिक तत्त्वों एवं कारणतावाद का खण्डन, सन्देहवाद।

इकाई-V

- कान्ट :- बुद्धिवाद और अनुभववाद की समीक्षा, देश और काल, प्रपञ्च एवं परमार्थ (फेनोमिना एवं नोमिना)।
- हेगेल :- द्वन्द्वात्मक विधि, निरपेक्ष प्रत्ययवाद।

UNIT-I

- Origin and Nature of Greek Philosophy, Major Characteristics of Western Philosophy, The Ultimate Principles in Ionic and Pythagorean Schools, Being in Eleatic School, Heraclitus' Doctrine of Becoming, Empedocles' Doctrine of Elements.
- Anaxagoras' Doctrine of Nous, Atomic theories of Leucippus and Democritus, Main principles of Sophists, The Socratic Method,

UNIT-II

- Plato- Knowledge, Opinion & Belief, Ideas, Matter & Form, Causation
- Aristotle- Criticism of Theory of Ideas, Matter and Form, Causality, Actuality and Potentiality
- St. Augustine's Theory of Knowledge, the Problem of Evil,
- Thomas Aquinas's view of God, Distinction between Faith and Reason.

UNIT-III

- Descartes- The Problem of Philosophy, Method of doubt, *Cogito Ergo Sum*, concept of Substance, Proofs for the Existence of God, Mind- Body Relation.
- Spinoza- concept of Substance, Attribute and Mode, God and Pantheism.
- Leibniz- Theory of Monads and Pre -established Harmony.

UNIT-IV

- John Locke- Refutation of Innate Ideas, Theory of Knowledge, Substance, Primary and Secondary Qualities.
- George Berkeley- Criticism of Materialism, *Esse Est Percipi* and Subjective Idealism
- David Hume- Culmination of Empiricism, Refutation of Metaphysical Entities and Causality, Scepticism

UNIT-V

- Immanuel Kant's Reconciliation of Rationalism and Empiricism, Space and Time, Phenomena and Noumena.
- Hegel- Dialectic Method, Absolute Idealism.

पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcome)

- CO1 – प्राचीन व आधुनिक पाश्चात्त्य दर्शन के विशिष्ट दार्शनिक सिद्धान्तों को समझ सकेंगे तथा उनकी समीक्षात्मक व्याख्या कर सकेंगे।
- CO2 – जगत् के मूलतत्त्व के सम्बन्ध में प्राचीन ग्रीक व आधुनिक पाश्चात्त्य दार्शनिकों के विचारों को समझ सकेंगे एवं उनकी समीक्षात्मक व्याख्या कर सकेंगे।
- CO3 - ज्ञान के स्वरूप एवं स्रोत के सम्बन्ध में प्राचीन एवं आधुनिक पाश्चात्त्य दार्शनिकों के विचारधाराओं को स्पष्टता पूर्वक समझ सकेंगे।

सहायक ग्रन्थ (Recommended Readings)-

1. Durant, W. (1926). *A story of Philosophy*, Simon & Schuster

2. Russell, B. (1987). *A History of Western Philosophy*, Union paper Backs, London.

3. Thilly F. (1975). *History of Western Philosophy*, Central Book Depot, Allahabad.

4. Stace, W.T. (1985) *A Critical History of Greek Philosophy*. Macmillan, New Delhi,

5. Masih, Y. (1994) *A Critical History of Western Philosophy*, Motilal Banarasidas, Delhi.

6. सिंह, बी. एन. (1973). *पाश्चात्त्य दर्शन*. स्टूडेन्ट्स फ्रेन्ड्स एण्ड कम्पनी, वाराणसी.

7. दयाकृष्णा (1988). *पाश्चात्य दर्शन.* भाग – 1, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी.

8. शर्मा, सी. डी. (1992). *पाश्चात्य दर्शन.* मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली.

9. श्रीवास्तव, जगदीश सहाय (1973). आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का वैज्ञानिक इतिहास, पुस्तक सदन.

Mapping of Course Outcomes with Programme Outcomes & Programme Specific Outcomes

Cos	Po1	PO 2	PO 3	PO 4	PO 5	PO 6	PO 7	PO 8	PO 9	PO 10	PO 11	PO 12	PO 13	PO 14	PO 15	PS O 1	PS O 2	PS O 3	PS O 4	PS O 5	PS O 6	PS O 7	PS O 8	PSO 9
CO1	3	3			2		2							2					2			1	1	
CO2	3	3	2	1	3		3							3					2			1	2	
CO3	3	3	3	2	2	2	2	2	2					2			2		2			1	2	

सत्र - तृतीय
Semester – III

DSC	**नीतिशास्त्र**	**पूर्णाङ्क 100**
Paper Code BPI-C311	**Ethics**	**सत्रान्त परीक्षा - 60**
		सत्रीय मूल्याङ्कन - 40
		क्रेडिट 06

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम में नीतिशास्त्रीय विषय वस्तु को रखा गया है। यह शास्त्र मानवीय जीवन के लिए अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इस शास्त्र को लोक स्थिति का व्यवस्थापक माना गया है *(सर्वोपजीवकं लोकस्थितिकृन्नीतिशास्त्रकम्। शु.नी. 1/2)* तथा इसके अभाव में लोक व्यवहार की स्थिति को असंभव बताया गया है *(सर्वलोकव्यवहारस्थितिर्नीत्या विना नहि। शु.नी. 1/11)* इसके विद्या के भंग होने पर सम्पूर्ण जगत् के विनाश हो जाने का भी दावा शास्त्रों में मिलता है *(विपन्नायां नीतौ सकलमवशं सीदति जगत् – हितोपदेश – 2/75)*। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में प्राचीन व आधुनिक पाश्चात्त्य दार्शनिकों एवं प्राचीन भारतीय दर्शनों की प्रमुख नैतिक अवधारणाओं को प्रस्तुत किया गया है, जिसका उद्देश्य छात्रों को नैतिकता के विविध आयामों से परिचित कराना है, जिससे विद्यार्थी नैतिकता, न्याय, धर्म, उचित, शुभ आदि नैतिक प्रत्ययों तथा नैतिक सिद्धान्तों को सम्यक् प्रकार से समझ सकें तथा नैतिक निर्णयों का निर्माण तथा नैतिक मूल्यांकन करने में प्रवीण हो सकें।

प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 30 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 अङ्क असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 60 अङ्क की होगी। सत्रान्त परीक्षा हेतु प्रस्तुत प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब तथा स) में विभक्त होगा। खण्ड 'अ' में 5 अतिलघूत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 02 अङ्कों का होगा। खण्ड 'ब' में 06 लघूत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 04 प्रश्नों का उत्तर 150-150 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'ब' का प्रत्येक प्रश्न 5 अङ्कों का होगा। खण्ड 'स' में 05 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 03 प्रश्नों का उत्तर 500-500 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'स' का प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्कों का होगा।

Course Contents (पाठ्य – विषय)

इकाई-I - परिचय

- नीतिशास्त्र का अर्थ, स्वरूप, विषय-वस्तु एवं उपयोगिता।
- नीतिशास्त्र की शाखाएं – मानकीय नीतिशास्त्र, अधिनीतिशास्त्र, सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र एवं अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र।
- सम्बन्ध – नीतिशास्त्र और समाजशास्त्र, नीतिशास्त्र और राजनीतिशास्त्र, नीतिशास्त्र और मनोविज्ञान, नीतिशास्त्र और धर्मशास्त्र।

इकाई – II - नैतिक प्रत्यय

- नैतिक प्रत्यय का अर्थ एवं स्वरूप।

- मौलिक नैतिक प्रत्यय – शुभ-अशुभ, उचित-अनुचित, कर्त्तव्य-निषिद्ध कर्म, सद्गुण-दुर्गुण, न्याय-अन्याय।

इकाई-III - नैतिक निर्णयन के प्रमुख तत्त्व एवं नैतिकता की आवश्यक मान्यताएं।

- नैतिक निर्णयन हेतु विचारणीय प्रमुख तत्त्व ;- ऐच्छिक कर्म, आचरण एवं चरित्र। इच्छा, प्रयोजन, अभिप्राय एवं परिणाम। साध्य एवं साधन सम्बन्धी नैतिक विवाद ।
- नैतिकता की आवश्यक मान्यताएं ; प्राथमिक - व्यक्तित्व, विवेक, संकल्प स्वातन्त्र्य। गौण - आत्मा की अमरता, ईश्वर का अस्तित्व।
- नियतिवाद।

इकाई – IV - नैतिक मानदण्ड

- नैतिक मानदण्ड का अर्थ, स्वरूप एवं प्रकार।
- नियमवाद : 1. बाह्य नियमवाद – राजकीय नियम, सामाजिक नियम, धार्मिक या ईश्वरीय नियम। 2. आन्तरिक नियमवाद – नैतिक इन्द्रियवाद, रसेन्द्रियवाद, तर्कवाद तथा बुद्धिवाद।
- हेतुवाद ; सुखवाद – स्वार्थमूलक सुखवाद, परार्थमूलक सुखवाद, उपयोगितावाद, बुद्धिमूलक उपयोगितावाद, आदर्शवादी उपयोगितावाद, विकासात्मक सुखवाद। आत्मपूर्णतावाद।

इकाई – V – प्रमुख भारतीय नैतिक अवधारणाएं

- ऋत् सिद्धान्त, श्रेय एवं प्रेय, ऋणत्रय, कर्म सिद्धान्त।
- धर्म का स्वरूप तथा धर्म के दस लक्षण।
- यम, पञ्चशील एवं पञ्चमहाव्रत।
- निष्काम कर्म।

Unit – 1 – Introduction

- Meaning, Nature, Subject-Matter and Importance of Ethics.
- Branches of Ethics – Normative Ethics, Metaethics, Virtue Ethics, Applied Ethics.
- Relation – Ethics and Sociology, Ethics & Politics, Ethics & Psychology, Ethics & Religion/Theology.

Unit – 2 – Ethical Concepts.

- Meaning and Nature of Ethical Concepts.
- Fundamental Ethical Concepts – Good - Evil, Right - Wrong, Duty and Prohibited Action, Virtue – Vice, Justis – Injustice.

Unit – 3 - Major Elements and Postulates of Moral Judgment.

- Major Elements of Moral Judgment; - Voluntary Actions, Conduct, Character. Desire, Motive, Intension and End. Ethical Dispute of 'Means' and 'End'.
- Postulates of Morality; Primary – Personality, Reason, Free Will. Secondary – Immortality of Soul and Existence of God.
- Determinism.

Unit – 4 – Moral Standards or Moral Norms.

- Meaning, Nature and Kinds of Moral Norms.
- Theory of Moral Law; 1. External Law – Political Law, Social Law, Divine Law. 2. Internal Law – Moral Sense Theory, Aesthetic Sense Theory, Dianoetic Theory and Rationalism.
- Teleological Theory; Hedonism – Egoistic Hedonism, Altruistic Hedonism, Utilitarianism, Rational Utilitarianism, Ideal Utilitarianism, Evolutional Hedonism. Perfectionism.

Unit – V – Major Ethical Concepts of Indian Philosophy

- *Ṛta* Theory*, Shreya & Preya*, *Ṛnatraya*, theory of *Karma.*
- Nature of *Dharma* & Ten Characteristics of *Dharma.*
- *Yama, Panchshila & Panchmahavrat.*
- *Niṣkāmakarma*

पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcome)

- CO1 - नीतिशास्त्र के अर्थ, स्वरूप एवं विषय-वस्तु का स्पष्ट बोध एवं व्याख्या कर सकेंगे।
- CO2 – नैतिक प्रत्ययों एवं निर्नैतिक प्रत्ययों में स्पष्ट अन्तर करने में समर्थ हो सकेंगे।
- CO3 – नैतिक निर्णय का निर्माण करने तथा नैतिक निर्णयों का सम्यक् मूल्यांकन करने में समर्थ हो सकेंगे।
- CO4 - प्राचीन व आधुनिक पाश्चात्य दर्शन एवं भारतीय दर्शन के प्रमुख नैतिक सिद्धान्तों को समझ सकेंगे तथा उनकी समीक्षात्मक व्याख्या कर सकेंगे।

Recommended Readings:

- Aristotle, (1926) *Nichomachian Ethics*, Harvard University Press.
- Hartmann, N. (1950) *Moral Phenomena,* New Macmillan.
- Kant, Immanuel: *Groundwork of the Metaphysics of Morals*, Trans. H J Paton, as The Moral Law. London.
- Mill, JS (1863): *Utillitarianism*, London, in Mary Warnock. Ed.1962

- Prasad, R. (1989): *Karma, Causation and Retributive Morality*, ICPR, New Delhi.
- Sharma, I.C., (1965) *Ethical Philosophies of India*, London: George Allen and Unwin Ltd.
- Goodman, Charles. (2009), *Consequences of Compassion: An Introduction and Defense of Buddhist Ethics*, New York: Oxford University Press.
- Gowans, Christopher W. (2015), *Buddhist Moral Philosophy: An Introduction*, New York - London, Routledge.
- Radhakrishnan, S. (1929) *Indian Philosophy, Volume 1*. Muirhead Library of Philosophy (2nd ed.) London: George Allen and Unwin Ltd.
- Radhakrishnan, S. and Moore, C. A. (1967) *A Sourcebook in Indian Philosophy*, Princeton.
- Raju, P.T. (1985) *Structural Depths of Indian Thought,* Albany, NY: State University of New York Press.
- Sharma, C.D (2000), *A Critical Survey of Indian Philosophy*, Motilal Banarasidas,
- पाण्डेय, संगल लाल (1991). नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण. सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस इलाहाबाद
- भारतीय, भवानी लाल (2006) ; ऋषि दयानन्द. सिद्धांत और जीवन दर्शन,
- लौगाक्षिभास्कर, अर्थसंग्रह .
- योगदर्शन, गीताप्रेस, गोरखपुर।
- श्रीमद्भगवद्गीता, गीताप्रेस, गोरखपुर ।
- वर्मा, वेद प्रकाश (1994). *नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त,* 4वाँ संस्करण .ऍलाइड पब्लिशर्स प्राईवेट लिमिटेड
- वर्मा, वेद प्रकाश (1995). *अधनीतिशास्त्र के मुख्य सिद्धान्त*. द्वितीय संस्करण. ऍलाइड पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड.
- वर्मा, अशोक (2005). *नीतिशास्त्र की रूपरेखा*. मोतीलाल बनारसीदास
- कुमार, सुरेन्द्र (भाष्य). मनुस्मृति.
- वेदालंकार, जयदेव, भारतीय दर्शन की समस्याएं, प्राच्यविद्या शोध प्रकाशन, हरिद्वार।

Mapping of Course Outcomes with Programme Outcomes & Programme Specific Outcomes

Cos	Po1	PO 2	PO 3	PO 4	PO 5	PO 6	PO 7	PO 8	PO 9	PO 10	PO 11	PO 12	PO 13	PO 14	PO 15	PS O 1	PS O 2	PS O 3	PS O 4	PS O 5	PS O 6	PS O 7	PS O 8	PSO 9
CO1		3								3	3	3	3	1		3		3	2		2	3	1	1
CO2		3								3	3	3	3	1		3		3	2		2	3	2	1
CO3		3								3	3	3	3	1		3		3	2		2	3	2	1
CO4		3								3	3	3	3	1		3		3	2		2	3	2	1

SEC	**पातञ्जल योग एवं व्यक्तित्व**	**पूर्णाङ्क : 100**
Paper Code BPI-S311	**विकास (सैद्धान्तिक एवं**	**सत्रान्त परीक्षा : 60**
	प्रयोगात्मक)	**सत्रीय मूल्याङ्कन : 40**
	Patanjal Yoga & Personality Development (Theoretical & Practical)	
		क्रेडिट : 04

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम में प्राचीन भारतीय योग-विद्या से सम्बन्धित प्रमुख दार्शनिक अवधारणाओं को प्रस्तुत किया गया है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को योग-विद्या की विशेषताओं एवं प्रमुख यौगिक क्रियाओं का ज्ञान कराना एवं यौगिक पद्धतियों से उनके व्यक्तित्व को परिष्कृत करना है, जिससे विद्यार्थी जीवन में उत्पन्न होने वाली विषम परिस्थितियों में भी स्वयं को संतुलित व निरोगी बनाएं रखने में प्रवीण हो सकेंगे।

प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि -

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 30 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 असाइनमेण्ट के होंगे अथवा 40 अङ्क प्रयोगात्मक परीक्षा अथवा 40 मौखिक परीक्षा। सत्रान्त परीक्षा 60 अङ्क की होगी। सत्रान्त परीक्षा हेतु प्रस्तुत प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब तथा स) में विभक्त होगा। खण्ड 'अ' में 5 अतिलघूत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 02 अङ्कों का होगा। खण्ड 'ब' में 06 लघूत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 04 प्रश्नों का उत्तर 150-150 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'ब' का प्रत्येक प्रश्न 5 अङ्कों का होगा। खण्ड 'स' में 05 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 03 प्रश्नों का उत्तर 500-500 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'स' का प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्कों का होगा।

Course Contents (पाठ्य – विषय)

इकाई - I

- योग – परिभाषा, स्वरूप एवं महत्त्व।
- योग के प्रमुख प्रकार– अष्टाङ्ग-योग तथा क्रियायोग।

इकाई - II

- व्यक्तित्व एवं व्यक्तित्व विकास की अवधारणा एवं प्रमुख परिभाषाएं।

- व्यक्तित्व विकास के प्रमुख आयाम एवं उसे प्रभावित करने वाले मुख्य कारक।

इकाई – III व्यक्तित्व विकास में योग की भूमिका - I

- सन्तुलित शारीरिक व्यक्तित्व विकास – आसन एवं प्राणायाम।
- संवेगात्मक स्थिरता – क्रिया योग की भूमिका।
- सामाजिक समायोजन में सहायक – मैत्री, करुणा, मुदिता एवं उपेक्षा (चित्त प्रसाद के साधन)

इकाई – IV व्यक्तित्व विकास में योग की भूमिका - II

- नैतिक व्यक्तित्व का विकास – यम एवं नियम।
- आध्यात्मिक व्यक्तित्व का विकास – धारणा एवं ध्यान।
- बौद्धिक व्यक्तित्व का विकास – प्राणायाम एवं ध्यान।

इकाई – **V सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक**

- आसन का अभ्यास।
- प्राणायाम का अभ्यास।
- धारणा का अभ्यास।
- ध्यान का अभ्यास।

UNIT – I

- Yoga- Definition, Nature and Importance.
- Main Types of Yoga – *Astang-yoga* & *Kriyayoga.*

UNIT– II

- Concept of Personality and Personality Development- Main Definitions.
- Main Dimensions of Personality Development, Main Effective Factors.

UNIT – III Role of Yoga in Personality Development - I

- Development of Balanced Physical Personality – *Aasana and Pranayama*.
- Emotional Stability - Role of Kriya Yoga.
- Helpful in Social Adjustment- Maitri, Karuna, Mudita and Upeksha (The Means of Citta Prasada)

UNIT – IV Role of Yoga in Personality Development – II

- Development of Moral Personality-Yama and Niyama.
- Development of Spiritual Personality – Dharana and Dhyan.
- Development of Rational Personality – Pranayama and Dhyan.

UNIT – V Theoretical & Practical

- Practice of Asana.
- Practice of Pranayama.
- Practice of Dharana.
- Practice of Dhyana (Meditation).

पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcome)

CO1 – इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी योग के अवधारणा को स्पष्टता पूर्वक समझ सकेंगे।

CO2 – योग के प्रमुख प्रकारों में अन्तर कर सकेंगे।

CO3 - यौगिक क्रिया करके मन को शान्त व स्थिर तथा शरीर को स्वस्थ बना सकेंगे।

CO4 – यौगिक क्रियाओं से व्यक्तित्व को सकारात्मक दिशा में विकसित कर सकेंगे।

सहायक ग्रन्थ (Recommended Readings):

1. Sachdeva, I.P. : Yoga and Depth Psychology
2. पातञ्जल योगसूत्र - व्यासभाष्य
3. सिंह, रामहर्ष (1999). *योग एवं यौगिक चिकित्सा*. चौखम्बा संस्कृति प्रतिष्ठान, दिल्ली।
4. शास्त्री, विजयपाल, (2019). *योग विज्ञान प्रदीपिका*. सत्यम पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
5. परिव्राजक, सत्यवती (2018). *योगदर्शनम्*. वानप्रस्थ साधक आश्रम,
6. योगेन्द्रजीत (1982). *विकासात्मक मनोविज्ञान*. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
7. भट्ट, कविता (2015). योग दर्शन में प्रत्याहार द्वारा मनोचिकित्सा. किताब महल, इलाहाबाद।
8. महाप्रज्ञ, युवाचार्य (1992). किसने कहाँ मन चंचल है. तुलसी अध्यात्मक नीडम् जैन विश्व भारती, राजस्थान।
9. सिंह, अरूण कुमार & सिंह, आशीष कुमार (2002). व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, नरेन्द्र प्रकाश जैन, दिल्ली।

Mapping of Course Outcomes with Programme Outcomes & Programme Specific Outcomes

Cos	Po 1	PO 2	PO 3	PO 4	PO 5	PO 6	PO 7	PO 8	PO 9	PO 10	PO 11	PO 12	PO 13	PO 14	PO 15	PS O 1	PS O 2	PS O 3	PS O 4	PS O 5	PS O 6	PS O 7	PS O 8	PS O 9
CO1	1	3								2				1	3				2		3	2		3
CO2		3								2					3				2		2	2		3
CO3														1	3				1		2	2	1	3
CO4										2				1	3				3			3	1	3

सत्र - चतुर्थ
Semester – IV

DSC	**पाश्चात्त्य तर्कशास्त्र**	**पूर्णाङ्क 100**
Paper Code BPI-C411	**Western Logic**	**सत्रान्त परीक्षा - 60**
		सत्रीय मूल्याङ्कन - 40
		क्रेडिट 06

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम में तर्क की पाश्चात्त्य प्रविधियों को प्रस्तुत किया गया है, जिसका उद्देश्य छात्रों को पाश्चात्त्य दर्शन के तार्किक सिद्धान्तों एवं अवधारणाओं का सम्यक् बोध कराना तथा निर्णयों की तार्किक परीक्षा करने की दक्षता प्रदान करना है।

प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 30 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 अङ्क असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 60 अङ्क की होगी। सत्रान्त परीक्षा हेतु प्रस्तुत प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब तथा स) में विभक्त होगा। खण्ड 'अ' में 5 अतिलघूत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 02 अङ्कों का होगा। खण्ड 'ब' में 06 लघूत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 04 प्रश्नों का उत्तर 150-150 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'ब' का प्रत्येक प्रश्न 5 अङ्कों का होगा। खण्ड 'स' में 05 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 03 प्रश्नों का उत्तर 500-500 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'स' का प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्कों का होगा।

Course Contents (पाठ्य – विषय)

इकाई I: तर्कशास्त्र की प्राथमिक अवधारणाएं

1. तर्कवाक्य और वाक्य
2. निगमनात्मक और आगमनात्मक युक्तियाँ
3. सत्यता, वैधता और संपुष्टि

इकाई II: परम्परागत तर्कशास्त्र

1. पद और पदों की व्याप्ति
2. निरपेक्ष तर्कवाक्य
3. परम्परात्मक विरोध.वर्ग और सत्तात्मक तात्पर्य
4. साधारण भाषा के वाक्यों को मानक आकार में परिवर्तित करना
5. अव्यवहित अनुमान . परिवर्तन, प्रतिवर्तन और प्रति.परिवर्तन
6. निरपेक्ष न्यायवाक्य : आकृति और अवस्था
7. न्यायवाक्यीय नियम और दोष
8. वेन.आरेख

इकाई III: प्रतीकीकरण

1. सत्यता फलन के प्रकार (निषेध, संयोजन, विकल्प, हेतु.हेतुमत्)

2. कथन, कथन के आकार और तार्किक अभिकथन
3. निर्णय प्रणाली : सत्यता सारिणी की पद्धति और तर्क को असिद्ध करना

इकाई IV: अनौपचारिक तर्कदोष

(आई०एम० कोपी के पुस्तक ''Introduction to logic '',14th ed. के अनुसार)

UNIT I: Basic Logical Concepts

1. Proposition and Sentence
2. Deductive and Inductive arguments
3. Truth, Validity and Soundness

UNIT II: Traditional Logic

1. Terms and Distribution of Terms.
2. Categorical Propositions.
3. Traditional Square of Opposition and Existential Import.
4. Translating Ordinary Language Sentences into Standard Form.
5. Immediate Inference – Conversion, Obversion and Contraposition.
6. Categorical Syllogism: Figure and Mood
7. Syllogistic Rules and Fallacies
8. Venn-Diagram

UNIT III: Symbolization

1. Types of Truth Functions (Negation, Conjunction, Disjunction (Alternation), Conditional.
2. Statements, Statement forms and Logical Status.
3. Decision Procedures: Truth Table Method and *Reductio ad Absurdum*.

UNIT IV: Informal Fallacies

(As given in I. M. Copi, 14th ed.)

पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcome)

- CO1 - विद्यार्थी तर्क के पाश्चात्य प्रविधियों का बोध एवं व्याख्या कर सकेंगे।
- CO2 - तार्किक युक्ति का निर्माण करके किसी कथन की वैधता सुनिश्चित करने में दक्ष हो सकेंगे।
- CO3 - प्रतीकों के माध्यम से व्यापक तार्किक संरचनाओं को सीमित कर सरलतापूर्वक उनकी तार्किक परीक्षा कर सकेंगे।
- CO4 - सत्य तर्क एवं असत्य तर्क में अन्तर करने में दक्ष हो सकेंगे।

Prescribed Texts:

- Basson, A. H. and O'Connor, D. J. (1960) *An Introduction to Symbolic Logic*, Free Press. **I**
- Copi, I. M. (2010) *Introduction to Logic* (14th ed) New Delhi: Prentice Hall of India हिन्दी अनुवाद. पाण्डेय, डॉ० संगमलाल, *तर्कशास्त्र का परिचय* , ।
- वर्मा, अशोक कुमार (1999). *प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र प्रवेशिका*. मोतीलाल बनारसीदास।
- वर्मा, अशोक कुमार (2005). *सरल निगमन तर्कशास्त्र*. मोतीलाल बनारसीदास।
- तिवारी, अविनाश (2014). तर्कशास्त्र के सिद्धान्त. सरस्वती प्रकाशन, इलाहाबाद।
- जायसवाल, अरविन्द & सिंह, नीति (2019). तर्कशास्त्र के प्रारम्भिक सिद्धान्त. वर्तनी पब्लिकेशन, इलाहाबाद।

Mapping of Course Outcomes with Programme Outcomes & Programme Specific Outcomes

Cos	Po 1	PO 2	PO 3	PO 4	PO 5	PO 6	PO 7	PO 8	PO 9	PO 10	PO 11	PO 12	PO 13	PO 14	PO 15	PS O 1	PS O 2	PS O 3	PS O 4	PS O 5	PS O 6	PS O 7	PS O 8	PS O 9
CO1		3		2		3	3	3	3								3			3			2	
CO2		3		2		3	3	3	3								3			3			2	
CO3		3		2		3	3	3	3								3			3			2	
CO4		3		2		3	3	3	3								3			3			2	

सत्र - चतुर्थ
Semester – IV

DSC **Paper Code BPI-S411**	**शास्त्रार्थ - सिद्धान्त एवं परम्परा** **(सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक)** **Debate - Theory and Tradition** **(Theory & Practical)**	**पूर्णाङ्क 100** **सत्रान्त परीक्षा - 60** **सत्रीय मूल्याङ्कन - 40**

क्रेडिट : 04

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को प्राचीन भारतीय दार्शनिक वाङ्मय में वर्णित शास्त्रार्थ-विद्या के सिद्धान्त एवं शास्त्रार्थ की परम्पराओं का सम्यक् ज्ञान प्रदान कराना है, जिससे वे अपने शैक्षणिक व सामाजिक जीवन में शास्त्रार्थ की विधि के द्वारा किसी भी तथ्य की यथार्थता की सम्यक् चर्चा करने में दक्ष हो सकेंगे। यह पाठ्यक्रम अवश्य ही विद्यार्थियों के संवाद-कौशल को परिष्कृत करने में उपयोगी सिद्ध होगा।

प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि-

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 30 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 असाइनमेण्ट के होंगे अथवा 40 अङ्क प्रयोगात्मक परीक्षा अथवा 40 मौखिक परीक्षा। सत्रान्त परीक्षा 60 अङ्क की होगी। सत्रान्त परीक्षा हेतु प्रस्तुत प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब तथा स) में विभक्त होगा। खण्ड 'अ' में 5 अतिलघूत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 02 अङ्कों का होगा। खण्ड 'ब' में 06 लघूत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 04 प्रश्नों का उत्तर 150-150 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'ब' का प्रत्येक प्रश्न 5 अङ्कों का होगा। खण्ड 'स' में 05 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें किन्हीं 03 प्रश्नों का उत्तर 500-500 शब्दों में अपेक्षित होगा। खण्ड 'स' का प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्कों का होगा।

Course Contents (पाठ्य – विषय)

इकाई - I

- शास्त्रार्थ का अर्थ एवं महत्त्व।
- शास्त्रार्थ का मूल उद्देश्य एवं शास्त्रार्थ की परम्परा, प्रमुख रूप – लिखित एवं मौखिक।
- शास्त्रार्थ के मुख्य पक्ष – पूर्वपक्ष, उत्तरपक्ष।
- वादी, प्रतिवादी एवं निर्णायक।

इकाई – II **शास्त्रार्थ के प्रमुख तत्त्व**

- तिस्र कथा :- वाद, जल्प एवं वितण्डा।
- प्रमाण :– प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं शब्द।

- तर्क।

इकाई – III **शास्त्रार्थ के प्रमुख उद्देश्य**

- तत्त्वबोध।
- सत्य - असत्य और उचित - अनुचित का निर्णय।
- दार्शनिक, धार्मिक एवं सामाजिक सुधार का साधन।

इकाई – IV **शास्त्रार्थ-परम्परा**

- प्राचीन भारतीय युग - उपनिषद् एवं सूत्र ग्रन्थ।
- मध्यकालीन - आचार्य शंकर एवं कुमारिल भट्ट।
- आधुनिक काल – महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द एवं स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती।

Unit 1 :-

1. Meaning and Importance of Shastrartha,
2. Ultimate Aim of Shastrartha and Tradition of Shastrartha, Main Types - Written and Testimony,
3. Main Aspects of Shastrartha-Purvpaksha, Uttarpaksha.
4. Vadi, Prativadi and Judge/Decision Maker.

Unit 2 : Main Elements of Shastrartha

1. Tisrah Katha- Vada, Jalp and Vitanda.
2. Pramanas- Pratyaksha, Anumana, Upamana and Shabda.
3. Tarka .

Unit-3 : Main Purposes of Shastrartha

1. Knowledge of Reality.
2. The Judgement of Truth-False and Right-Wrong.
3. The Mean of Philosophical, Religious and Social Reformation.

Unit- 4: Tradition of *Shastrartha*

1. Ancient Indian Age - *Upanishad* and Sutra-*Grantha*
2. Middle Period - Acharya Shankar and Kumaril Bhatta

3. Modern Period – Maharshi Dayananda Saraswati, Swami Shraddhananda & Swami Darshanananda Saraswati.

पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcome)

CO1 – शास्त्रार्थ विधि के भारतीय सिद्धान्तों एवं शास्त्रार्थ की प्राचीन, मध्यकालीन व आधुनिक परम्परा को समझ सकेंगे।

CO2- शास्त्रार्थ के प्रमुख तत्त्वों, उसके प्रकारों का वर्गीकरण कर एवं द्वन्द्वात्मक सहित अन्य विधाओं से इसके सम्बन्ध एवं भेद को स्पष्ट कर सकेंगे।

CO3 – किसी तथ्य के वास्तविकता के अन्वेषण के सम्बन्ध में वैचारिक मंथन हेतु शास्त्रार्थ विधि का प्रयोग कर सकेंगे।

सहायक ग्रन्थ (Recommended Readings) :

1. न्यायसूत्र – वात्स्यायन भाष्य।
2. शास्त्री, उदयवीर **(2013).** *न्याय दर्शनम्.* गोविन्दराम हासानन्द
3. विद्यालंकार, सत्यकेतु – आर्यसमाज का इतिहास।
4. भारतीय, भवानीलाल – नवजागरण के पुरोधा।
5. आर्य, सोहनपाल सिंह**,** मार्क्स और ऋषि दयानन्द का समाज दर्शन – तुलनात्मक अध्ययन।
6. उपनिषद् अंक, कल्याण विशेषांक – गीता प्रेस गोरखपुर।
7. सरस्वती, दयानन्द (2015). सत्यार्थ प्रकाश, 83वाँ संस्करण, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली।
8. विद्यावाचस्पति, इन्द्र (2018). मेरे पिता, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली।
9. स्वामी श्रद्धानन्द, *कल्याण मार्ग का पथिक,* श्रद्धानन्द वैदिक शोध संस्थान, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
10. Datta, D.M. (1972). *The Six Ways of Knowing*, University of Calcutta.
11. Hiriyanna, M. (1994). *Outlines of Indian Philosophy*, Delhi: MLBD Publishers.
12. Hiriyanna, M. (2015). *The Essentials of Indian Philosophy*, Delhi: MLBD Publishers.
13. Mohanty, J.N. (1992). *Reason and Tradition in Indian Thought,* Oxford: Clarendon Press. (2002)
14. Radhakrishnan, S. (1929). *Indian Philosophy, Volume 1-2*. Muirhead Library of Philosophy (2nd ed.) London: George Allen and Unwin Ltd.

Mapping of Course Outcomes with Programme Outcomes & Programme Specific Outcomes

Cos	Po 1	PO 2	PO 3	P0 4	PO 5	PO 6	PO 7	PO 8	PO 9	PO 10	PO 11	PO 12	PO 13	PO 14	PO 15	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6	PSO7	PSO8	PSO 9
CO1	1	3	3	3	2	3	3	3	3					3			3		2	3			1	
CO2	1	3	3	3	2	3	3	3	3					3			3		2	3			1	
CO3	1	3	3	3	2	3	3	3	3					3			3		2	3			1	